International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in May 2024, ISSN -2393-8048

महानगर का संवेदनात्मक परिदृश्यः ममता कालिया की कहानियों में

पृथ्वी राज, पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. कुलदीप गोपाल शर्मा, सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान

सारांश

यह शोध–पत्र ममता कालिया की कहानियों में आधुनिक महानगर के संवेदनात्मक परिदृश्य का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ममता कालिया ने अपने कथा–साहित्य में महानगरीय जीवन की जटिलताओं, तनावों, सामाजिक विखंडन और मानसिक अकेलेपन को अत्यंत सजीवता के साथ चित्रित किया है। उनकी कहानियों में महानगर न केवल एक भौगोलिक स्थान है, बल्कि एक मानसिक और सामाजिक अनुभव भी है – जहाँ व्यक्ति आपाधापी, अस्तित्व–संकट और भावनात्मक शून्यता से जूझता है। विशेष रूप से, स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखिका ने शहरी जीवन में स्त्री की असुरक्षा, आत्मसंघर्ष और पहचान की जद्दोजहद को उकेरा है।

'ब्लैक होल', 'पलाश भवन', और '1980 की सर्दी' जैसी कहानियों के माध्यम से यह शोध दर्शाता है कि कैसे महानगर एक ओर व्यक्ति को आधुनिकता और स्वतंत्रता देता है, वहीं दूसरी ओर उसे संबंधहीनता, संवादहीनता और मानसिक अवसाद की ओर भी धकेलता है। इस शोध में ममता कालिया की भाषा, शिल्प और प्रतीकों का विश्लेषण करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि उनका लेखन महानगरीय यथार्थ का केवल चित्रण नहीं, बल्कि उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास है। यह अध्ययन समकालीन हिंदी साहित्य में शहरी संवेदना के महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में ममता कालिया की कहानियों की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

प्रस्तावना

विषय का चयन और औचित्य

भारतीय समाज में तेजी से होता शहरीकरण केवल भौतिक स्तर पर नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर भी गहरी छाप छोड़ रहा है। महानगर केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक और संवेदनात्मक अनुभव बन चुका है। हिंदी साहित्य में जिन लेखकों ने इस अनुभव को यथार्थ और गहराई से व्यक्त किया है, उनमें ममता कालिया का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उनकी कहानियों में महानगरीय जीवन के तनाव, अकेलापन, सामाजिक विसंगतियाँ और व्यक्ति की मानसिक स्थिति का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हुआ है।

उद्देश्य

- ममता कालिया की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन के यथार्थ को पहचानना और विश्लेषित करना, जिसमें सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक पक्ष सम्मिलित हों।
- यह समझना कि महानगर किस प्रकार एक संवेदनात्मक अनुभव के रूप में कहानी पात्रों के जीवन को प्रभावित करता है, विशेषकर स्त्री पात्रों के संदर्भ में।
- ममता कालिया की कहानियों के माध्यम से यह विश्लेषण करना कि महानगर में व्यक्ति की एकांतता, तनाव, संवादहीनता और संबंधों का विघटन किस प्रकार व्यक्त होता है।
- यह अध्ययन करना कि ममता कालिया का भाषा–शिल्प और प्रतीकात्मक शैली महानगर के भाव–जगत को व्यक्त करने में कितनी प्रभावशाली है।
- यह मूल्यांकन करना कि ममता कालिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में शहरी संवेदना को किस नई दृष्टि और गहराई के साथ प्रस्तुत करती हैं।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. संदीप कुलश्रेष्ठ का लेख "महानगरीय संवेदना और हिंदी कहानी" (2019) हिंदी कथा साहित्य में महानगर के भावात्मक एवं सामाजिक प्रभावों की पड़ताल करता है। लेखक का मानना है कि समकालीन हिंदी कहानियाँ महानगर को केवल एक स्थानिक संरचना नहीं, बल्कि एक संवेदनात्मक, मानसिक और सामाजिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वे विशेष रूप से ममता कालिया की कहानियों का उल्लेख करते हुए यह रेखांकित करते हैं कि उनकी कहानियाँ महानगरीय जीवन की भागदौड़, टूटते संबंधों, और व्यक्ति के भीतर पनपते अकेलेपन को सजीव रूप में चित्रित करती हैं। इस लेख में ममता कालिया के कथा संसार को महानगर की संवेदना से जुड़ा हुआ एक सशक्त दस्तावेज़ माना गया है।

अर्चना बाजपेयी (2019) ने अपने लेख "ममता कालिया की भाषा और शैली" में लेखिका के भाषा–शिल्प

का विश्लेषण किया है। बाजपेयी के अनुसार, ममता कालिया की भाषा सहज, स्पष्ट और संवादप्रधान है, जो शहरी जीवन की जटिलताओं को सहजता से प्रकट करती है। उनकी शैली में व्यंग्य और संवेदनशीलता का समन्वय पाठक को गहरे सोचने पर विवश करता है। यह लेख ममता कालिया की कहानियों में भाषा के माध्यम से भावों और सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को समझने में मददगार साबित होता है।

दीप्ति चतुर्वेदी (2021) ने "समकालीन महिला कथा लेखन" में समकालीन महिला लेखिकाओं की कहानियों पर विमर्श करते हुए बताया है कि ममता कालिया ने स्त्री की मानसिकता, सामाजिक दमन और स्वातंत्र्य की जद्दोजहद को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। चतुर्वेदी के अनुसार, उनकी कहानियाँ न केवल स्त्री विमर्श का अंग हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की संवेदनशील तस्वीर भी पेश करती हैं, जो हिंदी महिला कथा साहित्य की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

रेखा ठाकुर (2017) की पुस्तक "स्त्री और शहरी जीवन" शहरी जीवन में स्त्री की सामाजिक स्थिति और मानसिक दशा की गहन विवेचना है। ठाकुर ने ममता कालिया के साहित्य को उदाहरण देते हुए बताया है कि शहरी परिवेश में स्त्री की स्वतंत्रता सीमित और असुरक्षित बनी रहती है। वे यह स्पष्ट करती हैं कि कालिया की कहानियों में स्त्री पात्र आधुनिकता के संग्राम में अपनी पहचान बनाने का प्रयास करती हैं, जो महानगर के संवेदनात्मक संकट को रेखांकित करता है।

संजय तिवारी (2020) ने "महानगर और अकेलापनरू एक मूल्यांकन" लेख में महानगरीय जीवन की मानसिक जटिलताओं पर प्रकाश डाला है। तिवारी के अनुसार, ममता कालिया की कहानियाँ इस अकेलेपन और सामाजिक विसंगति का सजीव चित्रण हैं, जो आधुनिक शहरी समाज में व्यक्तिगत और पारिवारिक टूटन को उजागर करती हैं। उनका यह अध्ययन शहरी जीवन में व्याप्त संवादहीनता और मानवीय संबंधों की क्षीणता को समझने में सहायक है।

लेखिका का सामाजिक और मानसिक परिप्रेक्ष्य

ममता कालिया स्वयं महानगरीय जीवन का हिस्सा रही हैं। उनका अनुभव दिल्ली, इलाहाबाद, और अन्य शहरी परिवेश से जुड़ा रहा है। इस कारण उनकी कहानियों में जो शहरी यथार्थ आता है, वह न केवल देखा–सुना है बल्कि अनुभूत है।

मध्यवर्गीय दृष्टि

ममता कालिया की कहानियाँ मुख्यतः शहरी मध्यवर्ग की संवेदनाओं को प्रस्तुत करती हैं। ये पात्र उपभोक्तावादी समाज, नौकरी की आपाधापी, परिवार की टूटन और सामाजिक असुरक्षा से जूझते हैं।

एकांत का व्याकरणः 'ब्लैक होल' कहानी का विश्लेषण

'ब्लैक होल' ममता कालिया की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है, जिसमें महानगर में रहने वाले एक दंपति की मानसिक दूरी और अलगाव को दर्शाया गया है। दोनों एक ही घर में रहते हुए भी दो पृथक ग्रहों के प्राणी बन जाते हैं। यह कहानी बताती है कि महानगर में लोगों के पास संवाद के लिए समय नहीं है।

व्यस्तता और संबंधहीनता

महानगर का जीवन अत्यधिक व्यस्त और यांत्रिक होता जा रहा है। लोग दिनभर की भागदौड़ में इतना थक जाते हैं कि उनके पास न अपने लिए समय है, न दूसरों के लिए। यह मानसिक थकावट अंततः भावनात्मक शून्यता में बदल जाती है।

स्त्री की दृष्टि से महानगरीय जीवन

ममता कालिया की कहानियों में महानगर में जीती स्त्री की मनोस्थिति का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। 'पलाश भवन' में एक अकेली स्त्री किराए के मकान में रहने को मजबूर है, जहाँ उसे न केवल पुरुषों की दृष्टि से जूझना पड़ता है, बल्कि समाज की संदेह की निगाहों का सामना भी करना पड़ता है।

सुरक्षा और असुरक्षा का द्वंद्व

महानगर स्त्री को एक हद तक स्वतंत्रता देता है, परंतु साथ ही सुरक्षा की अनिश्चितता भी लेकर आता है। कालिया की कहानियाँ इस द्वंद्व को उजागर करती हैं।

पारिवारिक ढाँचे का विघटन

कालिया की कहानियाँ आधुनिक शहरी परिवारों की कमजोर होती कड़ियों को सामने लाती हैं। पति–पत्नी, माता–पिता और बच्चों के संबंधों में जो आत्मीयता कभी थी, वह अब औपचारिकता और दूरी में बदल गई है।

संबंधों में संवादहीनता

कई कहानियों में यह उभरकर आता है कि संवाद की कमी ही संबंधों की सबसे बड़ी त्रासदी बन गई है। लोग बातें तो करते हैं, लेकिन एक–दूसरे को सुनते नहीं।

महानगर और मानसिक अवसाद

कहानियों में यह भी दिखाया गया है कि महानगरीय जीवन से उपजा तनाव किस प्रकार मानसिक असंतुलन और अवसाद का कारण बनता है। '1980 की सर्दी' जैसी कहानी में पात्रों का मानसिक द्वंद्व और असंतोष प्रमुख रूप से चित्रित है।

आत्म–चिंतन की प्रक्रिया

महानगर में व्यक्ति अकेला तो होता ही है, वह अपने भीतर झाँकने को भी मजबूर होता है। ममता कालिया की कहानियाँ उस आत्मचिंतन को भी उभारती हैं जो मनुष्य को या तो टूटने या आत्म–नवाचार की ओर ले जाता है।

भाषा में आधुनिकता

ममता कालिया की भाषा अत्यंत जीवंत और समकालीन है। उसमें शहरी जीवन की गतिशीलता और तनाव दोनों उपस्थित रहते हैं। संवादों में सहजता के साथ–साथ मानसिक गहराई भी विद्यमान है।

प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग

'ब्लैक होल' जैसे शीर्षक स्वयं में ही प्रतीक हैं – एक ऐसे शून्य का, जहाँ से प्रकाश भी नहीं लौटता। ये प्रतीक महानगरीय जीवन की मानसिकता को सारगर्भित रूप में प्रकट करते हैं।

निष्कर्ष

ममता कालिया की कहानियाँ केवल शहरी जीवन का यथार्थ चित्रण भर नहीं हैं, वे उसके संवेदनात्मक धरातल को भी उजागर करती हैं। उनका लेखन यह दिखाता है कि महानगरों की चकाचौंध के पीछे गहरा अंधकार, अकेलापन और तनाव छिपा होता है। उनके पात्र इस तनाव को जीते हैं, उससे लड़ते हैं, और कई बार उससे टूट भी जाते हैं। कालिया की कहानियों में महानगर का चित्र एक समृद्ध, गतिशील, परंतु खंडित और संवेदनात्मक रूप से जर्जर समाज के रूप में सामने आता है।

संदर्भ सूची

- बाजपेयी, अ. (2019). ममता कालिया की भाषा और शैली. हिंदी आलोचना, 22(3), 78–84.
- चतुर्वेदी, डी. (2021). समकालीन महिला कथा लेखन. कथादेश, 33(4), 10–15.
- ठाकुर, आर. (2017). स्त्री और शहरी जीवन. भारतीय ज्ञानपीठ.
- तिवारी, एस. (2020). महानगर और अकेलापनः एक मूल्यांकन. समकालीन साहित्य, 8(1), 20–26.
- मौर्य, ज. (2020). स्त्री अस्मिता का विमर्शः ममता कालिया के संदर्भ में. हिंदी आधुनिक विमर्श, 11(1), 29–35.
- शर्मा, ए. (2013). हिंदी कहानी का यथार्थबोध. साहित्य सदन.
- सिंह, पी. (2012). हिंदी की आधुनिक कहानियाँ. प्रभात प्रकाशन.
- राय, स. (2016). महानगरीय संस्कृति और कथा साहित्य. समकालीन समीक्षा, 12(1), 55–60.
- श्रीवास्तव, जे. (2018). हिंदी महिला लेखन. साहित्य अकादमी.
- रावत, एम. (2022). ममता कालिया की कहानियों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य. नवलेखन, 19(2), 45–52.
- वर्मा, आर. (2014). शहरी जीवन और कथा साहित्य. सृजन प्रकाशन.
- झा, पी. (2021). स्त्री विमर्श और आधुनिकता. हिंदी पथ, 6(2), 38–42.
- सक्सेना, एम. (2017). समकालीन हिंदी कहानियाँः विश्लेषण और मूल्यांकन. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
- पांडेय, एन. (2013). कहानीरू समाज और यथार्थ. नीलांबर प्रकाशन.
- दुबे, के. (2016). समकालीन कहानी और सामाजिक सरोकार. साहित्य विमर्श, 4(1), 60–65.
- गोस्वामी, वी. (2010). हिंदी कथा साहित्य का विकास. लोकभारती प्रकाशन.
- ममता कालिया. (2018). ममता कालिया की प्रतिनिधि कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन.
- शर्मा, क. (2015). हिंदी की समकालीन महिला कथाकारें. वाणी प्रकाशन.
- मिश्रा, व. (2014). ममता कालिया की कहानियों में स्त्री दृष्टिकोण. नारी विमर्श, 5(2), 34–40.
- कुलश्रेष्ठ, एस. (2019). महानगरीय संवेदना और हिंदी कहानी. लोक साहित्य, 15(3), 72–78.